चक्रव्यूह

चक्रव्यूह

[रंगमंच पर सफलता पूर्वक खेले जाने योग्य नाटक]

रघुवरदयाल श्रीवास्तव एम० ए०
प्राध्यापक
श्री मर्दनसिंह इण्टर कालेज,
तालबेहट (झाँसी)

प्रकाशकः—
सरस्वती मन्दिर,
तालबेहट (झाँसी)

मूल्य १)

श्रीनिवास गुप्त द्वारा
"मानस-मुद्रण" सीपरी रोड, झाँसी में मुद्रित।

भूमिका

हिन्दी साहित्य के एक हजार वर्ष के इतिहास में नाटकों की आयु लगभग दो सौ वर्ष की ही है। कुछ लोग हिन्दी नाटकों का उदय सत्रहवीं शताब्दी से मानते हैं, किन्तु तत्कालीन तथा-कथित-नाटक संवाद ही हैं—उनमें नाटक के अन्य आवश्यक तत्वों का सर्वथा अभाव है—इसी लिये उन्हें नाटक कहने में मुझे संकोच है और मानने में आपत्ति। हिन्दी नाटकों की यह अल्पायु एक विचारणीय विषय है। सामाजिक और राजनैतिक इतिहास की साक्षी लेने पर ज्ञात होता है कि हर्ष-साम्राज्य के पतन के पश्चात और अकबर के उदय के पूर्व का समय संघर्ष, अशांति और संकट का समय था। हर्ष की मृत्यु के पश्चात देश कई छोटे २ टुकड़ों में बँट गया और इन छोटे २ भूभागों के स्वामी-राजा अहंमन्यता-पारस्परिक द्वेष और कलह में अपने जीवन की सार्थकता समझने लगे परिणाम स्वरूप देश पर विदेशियों के आक्रमण हुए। देश लुटा और पराधीन बना। विजेता आक्रामक- जो मुसलमान थे इस देश में बस गये। वे यहाँ के निवासियो से भिन्न धर्मावलम्बी और यहाँ की संस्कृति से भिन्न संस्कृति वाले थे। अपने धर्म और संस्कृति के प्रचार में इन मुसलमानों ने प्रत्येक सम्भव साधन का सहारा लिया। इनकी धार्मिक कट्टरता और परुष हृदयता से पाषाण भी सिसक उठे थे। दैन्य निराश्रयता, निराशा और आत्म ग्लानि जनित शोक की काली छाया भारतीय समाज पर मुसलमानों के शासन काल में सदव मँडराती रही।

यह एक निर्विवाद सत्य है कि प्रत्येक सहित्यकार पर उसके समय की सामाजिक और राजनैतिक दशाओं का गहरा प्रभाव पड़ता है।